* • Question :- ~~Psychoanalytic~~

Psychoanalitic Schools - Freud

Ans :- मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविश्लेषणवाद एक चुनौती के रूप में विकसित हुआ। इस वाद के जन्मदाता Sigmund Freud है। उनका जन्म 1856 ई० में हुआ। चिकित्सा शास्त्र में स्नातक श्रेणी प्राप्त करने के बाद वो Woundt महोदय के साथ काम करने लगे। 1885 ई० पेरिस जाकर शार्को के साथ नाड़ी शास्त्र का अध्ययन किया। तथा उन्माद के विषय में बहुत सी बातों को ज्ञात किया। पुनः वियतनाम जाकर ब्रायर के साथ चिकित्सा शुरु किये। 1899 ई० से लेकर 1939 ई० तक उनकी पुस्तके प्रकाशित हुई जिनमें उन्माद का अध्ययन, स्वप्न विश्लेषण, अचेतन, दैनिक जीवन के भूले आदि प्रमुख है।

मनोविज्ञान के इतिहास में मनोविश्लेषण वाद के जन्मदाता Freud माने जाते हैं। उन्होंने मनोविश्लेषण शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया।

(1) व्यक्तित्व के सिद्धान्त के रूप में जिसके द्वारा अचेतन तथा मानसिक प्रक्रियाओं की गतिशीलता का अध्ययन किया जाता है।

(2) मानसिक चिकित्सा के एक प्रविधि के रूप में जिसके द्वारा मानसिक रोगियों का इलाज होता है।

(3) मनोविज्ञान के एक सम्प्रदाय के रूप में।

Freud के समस्त विचारों की व्याख्या निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत की जा सकती है।

(1) व्यक्तित्व गति - Freud ने अपनी पुस्तक स्वप्न विश्लेषण, दैनिक जीवन के भूले इत्यादि में व्यक्तित्व की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। इनके अनुसार मूल प्रवृत्ति एक शक्ति का भण्डार है जो हर समय अपनी अभिव्यक्ति का प्रयास करता है। इस मूल प्रवृत्ति को Libido कहा गया है जो कामुक स्वभाव का होता है। उन्होंने केवल Libido को ही व्यवहार का एक मात्र प्रेरक माना है। लेकिन बाद में आक्रमण मूल प्रवृत्ति को दूसरी प्रेरक माना। जहाँ Libido जीने की इच्छा तथा निर्माण भावना को बढ़ाती है वहीं आक्रमण प्रवृत्ति विनाश करने के लिये प्रेरित करती है। इसी को जीवन तथा मृत्यु प्रवृत्ति के नाम से पुकारा गया।

(2) व्यक्तित्व संरचना:- Freud ने व्यक्तित्व संरचना के दो पहलुओं को उल्लेख किया गत्यात्मक तथा आकारात्मक पहलु। गत्यात्मक पहलु के अन्तर्गत ID, Ego Super Ego की चर्चा की जाती है। ID पूर्णतः अचेतन होता है जो सुख के सिद्धान्त से निर्देशित होता है। यह इच्छाओं का भंडार है। Ego वास्तविक सिद्धान्त को निर्देशित करता है तथा ID and Super Ego के बीच सन्तुलन रखता है। Super Ego आदर्श के सिद्धान्त से संचालित होता है। व्यक्तित्व का विकास इन तीनों के समायोजन पर निर्भर करता है। यदि ID मजबूत हुआ तो व्यक्ति का सम्बन्ध वास्तविकता से

Scanned with CamScanner

से टूट जाता है। इस तरह ID तथा Super Ego के बीच संघर्ष का समाधान अचेतन स्तर पर Ego द्वारा चलता रहता है।

आकारात्मक पहलु चेतन- भागों में बाँटा गया है। चेतन, अवचेतन, अचेतन इन सभी में अचेतन को व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। Freud के अनुसार अचेतन की रचना दमित इच्छाओं से होती है। जिसमें अतृप्त इच्छायें तथा यौन इच्छायें अपनी मौलिक जैविक युक्तियों के रूप में रहती है। इस तरह व्यक्तित्व में अचेतन का एक Basic भण्डार है। जहाँ अनैतिक तथा असामाजिक इच्छायें अपनी सन्तुष्टि विभिन्न मनो-वृतियों जैसे स्वप्न, दैनिक जीवन के भूल इत्यादि के माध्यम से कर ली जाती है।

(3) **रक्षात्मक युक्तियाँ** : ID तथा Super Ego के संघर्ष के कारण व्यक्ति में तनाव चिन्ता उत्पन्न होती है। जिसे कम या समाप्त करने के लिये Ego कुछ उपायों का सहारा लेता है जिन्हें रक्षा युक्तियाँ कहते है। इन युक्तियों से मानसिक संघर्षों का स्थायी समाधान हो जाता है। ये युक्तियाँ है। दमन प्रतिक्रिया, निर्माण, प्रक्षेपण, विस्थापन, युक्तिकरण, उदात्तीकरण प्रतिगमन आदि। इनमें से कुछ सफल तथा कुछ असफल युक्तियाँ कही जाती है। इस तरह Freud ने कहा कि इन युक्तियों के मदद से व्यक्ति को समायोजन में सहायता मिलती है। और अचेतन संघर्षों का समाधान भी होता है।

Scanned with CamScanner

(4) व्यक्तित्व विकास:

Freud ने व्यक्ति विकास का आधार मनोयौन माना है। Freud ने जीवन के प्रारम्भिक 5 वर्षों को व्यक्तित्व के बीजारोपण की अवस्था के रूप में स्वीकार किया है। मनोयौन विकास को पाँच भागों अवस्थाओं में बाँटा है। मौखिक अवस्था, गुदा अवस्था, लैंगिक अवस्था, सुप्त अवस्था, तथा जननेन्द्रिय अवस्था। इन अवस्थाओं का प्रारम्भ मौखिक अवस्था से होता है। जहाँ काम शक्ति चूसने तथा काटने में निहित रहती है। इस अवस्था में स्थिरीकरण के चलते व्यक्ति अधिक बोलने तथा परानुभोजी हो जाते हैं। इस तरह निराशा तथा संघर्ष के व्यक्ति कंजूस आदि हो जाते हैं। लैंगिक अवस्था में ओडिपल इलेक्ट्रा तथा मनोग्रन्थि का विकास होता है। इस अवस्था में निराशा के चलते समलैंगिकता नपुंसकता इत्यादि रोग व्यक्ति में उत्पन्न हो जाते हैं। सुप्त अवस्था तथा जननेन्द्रिय अवस्था का आगमन होता है। जहाँ अनेक प्रकार के उच्च सामाजिक व्यवहार उत्पन्न होते हैं।

(5) वैयक्तिक भिन्नता:-

Freud ने मुख्य रूप से शीलगुणों को ही व्यक्तित्व का मुख्य इकाई माना है। इसके निर्धारण में वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वैयक्तिक भिन्नताओं में वंशानुक्रम को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा है कि इसको के चलते

किसी का ID बनाता और किसी का मजबूत होता है।

युग में Freud का विश्वास था कि अनेक रोगियों के सभी लक्षण जीवन के प्रारम्भिक अवस्थाओं के किसी न किसी यौन इच्छा के तीव्र दुखद अनुभव से उत्पन्न होते हैं। आधुनिक मनोविश्लेषणवादी यह मानते हैं कि सम्पूर्ण जीवन की छोटी छोटी क्रियाएं भी शीलगुणों के विकास को प्रभावित करती है।

मूल्यांकन

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में व्यक्तित्व को समझने में और खासकर व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं को समझने में काफी योगदान दिया है। लेकिन आलोचकों ने Freud के विचार की कि काफी आलोचना की गई है।

(1) Freud के अनुसार ID, Ego, Super Ego तीन व्यक्तित्व की स्वतंत्र परन्तु है। जिनके द्वन्दों के चलते Ego प्रभावित होता है। लेकिन आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस स्थिति को स्वीकार नहीं करते हैं। क्योंकि ये तीनों अमिपूरणात्मक शक्तियां है। व्यक्तित्व नहीं।

(2) आलोचकों का कहना है कि Freud ने व्यक्तित्व विकास में वातावरण से अधिक परिपक्वता को महत्वपूर्ण बताया है। लेकिन आधुनिक मनोविश्लेषकों का कहना है कि व्यक्ति विकास में समाज, संस्कृति इत्यादि का बड़ा महत्व है। जहाँ Freud ने इन बातों की उपेक्षा कर मूल प्रवृत्ति को सार्वभौम माना।

Scanned with CamScanner

किसी का ID कमजोर और किसी का मजबूत होता है।

मुख्य में Freud का विश्वास था कि अनेक रोगियों के सभी लक्षण जीवन के प्रारम्भिक अवस्थाओं के किसी न किसी यौन इच्छा के तीव्र दुखद अनुभव से उत्पन्न होते हैं। आधुनि आधुनिक मनोविश्लेषणवादी यह मानते हैं कि सम्पूर्ण जीवन की छोटी छोटी क्रियायें भी शीलगुणों के विकास को प्रभावित करती है।

मूल्यांकन

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में व्यक्तित्व को समझने में और खासकर व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं को समझने में काफी योगदान दिया है। लेकिन आलोचकों ने Freud के विचार की कि काफी आलोचना की गई है।

(1) Freud के अनुसार ID, Ego, Super Ego तीन व्यक्तित्व की स्वतन्त्र पहलु है। जिनके दबावों के चलते Ego प्रभावित होता है। लेकिन आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस स्थिति को स्वीकार नहीं किया करते हैं। क्योंकि ये तीनों अभिप्रेरणात्मक शक्तियाँ है व्यक्तित्व नहीं।

(2) आलोचकों का कहना है कि Freud ने व्यक्तित्व विकास में वातावरण से अधिक परिपक्वता को महत्वपूर्ण बताया है। लेकिन आधुनिक मनोविश्लेषकों का कहना है कि व्यक्ति विकास में समाज, संस्कृति इत्यादि का बड़ा महत्व है। जहाँ Freud ने इन बातों की उपेक्षा कर मूल प्रवृति को सार्वभौम माना।

Scanned with CamScanner

(3) कुछ आलोचकों के अनुसार Freud ने मुख्य स्थान आदि जैसे अभिप्रेरकों की अवहेलना की है। विद्वानों का कहना है कि बड़े होने पर आवेग प्रकाशन का प्रेरक बहुत प्रमुख रूप ले लेता है।

(4) Freud का एक बड़ा दोष यह बताया गया है, कि वे हर बात की व्याख्या गत के आधार पर करते हैं। और वर्तमान की पूर्णतः उपेक्षा करते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिक सन्देह की दृष्टी से देखते हैं।

इन आलोचनाओं के बावजूद यह कहना होगा कि इतिहास में मनोविश्लेषणवाद काफी योगदान है। मनोचिकित्सा विज्ञान में उन्नति के बावजूद भी Freud के विचार और मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त हमेशा महत्वपूर्ण रहेंगे। और भावी अनुसंधान कर्ताओं को निर्देशित तथा प्रेरित करते रहेंगे।